NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

B.H.D.L.A.-136

B.A. General - 2nd Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2
Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	शब्द संपदा, लोकोक्तियां	1
2.	संवाद शैली, वाक्यगत संरचनाएं और शैलियां, अशुद्धियां एवं शोधन	19
3.	सरकारी पत्राचार तथा टिप्पण और प्रारूपण	33
4.	समाचार लेखन और संपादकीय	54
5.	अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार	71
6.	प्रभावी लेखन के गुण	86
7.	रचना (कंपोजीशन) की तैयारी	102
8.	पुनर्रचना (संक्षेपण, भाव पल्लवन आदि)	114
9.	वर्णनात्मक लेखन	131
10.	आख्यानपरक लेखन	144
11.	तार्किक लेखन	155

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

B.H.D.L.A.-136

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी खण्डों से निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।*

खण्ड-क

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. शब्द-रचना से आप क्या समझते/समझती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, 'शब्द-रचना'

प्रश्न 2. 'समाचार की भाषा' विषय पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-56, 'समाचार की भाषा', 'समाचार की भाषा कैसी हो'

प्रश्न 3. 'रचना की तैयारी' का क्या आशय है? उत्तर दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-103, 'रचना की तैयारी'

प्रश्न 4. आख्यानपरक रचना का लेखन करते समय लेखक को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-145, 'आख्यानपरक रचना का लेखन'

खण्ड-ख

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 5. सरकारी पत्र का एक प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-36, 'सरकारी पत्राचार'

प्रश्न 6. अपने नगर या क्षेत्र के स्वच्छता अभियान पर एक समाचार तैयार कीजिए।

उत्तर–स्वच्छता कायम करने और केंद्र सरकार के स्वच्छत भारत अभियान को धरातल पर लाने के लिए डीएम का जंग-ए ऐलान चल रहा है। गांव-गांव स्वच्छता अभियान चल रहा है, जिससे गांव को एक साफ, स्वच्छ और सुंदर बनाया जा रहा है। इसके लिए एक बार फिर गांव-गांव मुहिम चली है और ग्राम प्रधानों के साथ ग्रामीण भी स्वच्छता के बदलाव को लेकर निकल पड़े हैं।

स्वच्छता अभियान को बनाए रखने के लिए शनिवार की सुबह एक बार फिर से जंग छिड़ी, जो गांव-गांव सुबह से ही शुरू हो गई। डीएम ने बीते दिन जिला प्रशासन में शुक्रवार को गंदगी से युद्ध का ऐलान किया था।

इसके तहत शनिवार को जिले भर में स्वच्छता अभियान सुबह से ही शुरू कर दिया गया है, जिसमें ग्राम प्रधान एवं सचिवों को लगा दिया गया और ग्रामीणों ने स्वच्छता अभियान में भरपूर सहयोग किया है। लोग झाड़ू, खुरपी, फावड़ा लेकर निकल पड़े हैं और साफ-सफाई कर रहे हैं। इस स्वच्छता अभियान को लेकर गांव-गांव में एक उत्साह सा नजर आ रहा है, वहीं स्वच्छता अभियान को रफ्तार देने के लिए डीएम भी निकल पड़े हैं उन्होंने कई क्षेत्रों में भ्रमण किया है।

प्रश्न 7. वाक्य की समानार्थकता के सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-73, 'वाक्य की समानार्थकता का सिद्धांत'

प्रश्न 8. रिपोर्ट लेखन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-119, प्रश्न 3

प्रश्न 9. 'भाव पल्लवन' की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-115, 'भाव पल्लवन'

प्रश्न 10. तार्किक लेखन का तात्पर्य बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-155, 'तार्किक लेखन का तात्पर्य'

खण्ड-ग

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किन्हीं *चार* पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) भाषा के सामाजिक स्तर भेद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'भाषा के सामाजिक स्तर भेद'

(ख) वाक्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-19, 'वाक्य', 'वाक्य के प्रकार'

(ग) टिप्पण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-36, 'टिप्पण'

(घ) समाचार का संपादन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-55, 'समाचार लेखन और संपादन'

(ङ) अनुवाद की भाषा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-73, 'अनुवाद करने का व्यावहारिक ज्ञान'

(च) तार्किक लेखन की प्रक्रिया

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-155, 'तार्किक लेखन की प्रक्रिया'

(छ) अनौपचारिक पत्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-33, 'अनौपचारिक पत्र'

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

हिंदी भाषा : लेखन कौशल **B.H.D.L.A.-136**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। प्रत्येक खंड से उत्तर देना अनिवार्य है।*

खण्ड - क

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. शब्दों का अर्थ पक्ष क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'शब्दों का अर्थ पक्ष', पृष्ठ-10, प्रश्न 4

प्रश्न 2. संपादकीय लेखन से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-57, 'संपादकीय लेखन', पृष्ठ-68, 'संपादकीय पृष्ठ का लेख', पृष्ठ-70, प्रश्न 20

प्रश्न 3. शिल्प के स्तर पर प्रभावी लेखन किस प्रकार किया जा सकता है? चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-87, 'प्रभावी लेखन : शिल्प के स्तर पर'

प्रश्न 4. तार्किक लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-159, प्रश्न 6

खण्ड - ख

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 5. अनौपचारिक पत्र का एक प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-33, 'अनौपचारिक पत्र'

प्रश्न 6. अपने क्षेत्र के सरकारी अस्पताल की स्थिति पर एक समाचार तैयार कीजिए।

उत्तर–दिनकर संवाददाता–मौ/मेहगांव/अकलौनी–प्रदेश सरकार आमजन को बेहतर सेवाएं देने के लिए तमाम कवायद कर रही है। बावजूद इसके मौ, मेहगांव और गोरमी क्षेत्र के मानहड़ अस्पताल में स्वास्थ्य सेवाओं के हाल बेहाल हैं। स्थिति यह है कि इन स्थानों पर संचालित सरकारी अस्पताल में डॉक्टर्स, स्टाफ सहित संसाधनों का टोटा बना हुआ है। यहां वार्डो की कमी से लेकर अत्याधुनिक मशीन सहित अमले की भी भारी कमी है। इन अस्पतालों की पैथोलॉजी लैब में मलेरिया जांच की बेहतर सुविधाएं नहीं हैं। साथ ही अन्य जरूरी सामान भी नहीं है।

ज्ञात हो कि मौ अस्पताल में डॉक्टर्स के 6 पद हैं, जिनमें से 4 पद लंबे समय से रिक्त हैं। इसके अलावा अस्पताल में पिछले कई साल से महिला डॉक्टर का पद खाली है। स्थिति यह है कि अस्पताल में हर साल एक हजार से अधिक डिलीवरी होने के लिए आती हैं। उनकी डिलीवरी नर्सों द्वारा की जाती है। वहीं गंभीर स्थिति होने पर क्षेत्र की गर्भवती महिलाओं को सीजर ऑपरेशन और डिलीवरी के लिए गोहद, भिंड और ग्वालियर जाना पड़ रहा है। इसके अलावा अस्पताल के वार्डों में मरीजों को पलंग पर बिछाने के लिए चादर नहीं मिल रही है। वहीं पलंग पर बिछे गद्दे भी फटे हुए हैं।

समय पर नहीं आते हैं डॉक्टर्स–स्थानीय निवासियों का कहना है कि अस्पताल की ओपीडी सुबह 8 बजे शुरू होती है, लेकिन मरीजों को देखने के लिए डॉक्टर्स सुबह 10 बजे के बाद आते हैं। इस स्थिति में स्थानीय और दूर गांव से आए मरीज और अटेंडर को उनका इंतजार करना पड़ता है। इस संबंध में बीएमओ से कई दफा शिकायत की है। लेकिन उसके बाद भी स्थिति जस की तस बनी हुई है।

कूलर और पंखे खराब, गर्मी से मरीज हो रहे परेशान–मौ और मेहगांव अस्पताल में मरीजों को गर्मी से बचाने के लिए कूलर-पंखे लगे हुए हैं, लेकिन ये पिछले कई महीनों से खराब हैं। इस कारण इन अस्पतालों के वार्ड में भर्ती मरीजों को गर्मी से परेशान होना पड़ रहा है। इसके अलावा दोनों स्थानों के सरकारी अस्पतालों में बिजली गुल होने पर बिजली सप्लाई के लिए जनरेटर लगे हुए हैं, लेकिन पिछले एक साल से यह जनरेटर खराब हैं। प्रबंधन द्वारा सही नहीं कराए जा रहे हैं। इसके अलावा यहां पर मरीजों को पीने के लिए शुद्ध और ठंडा पानी नहीं मिल रहा है। इस स्थिति में मरीजों के साथ आए अटेंडर को बाजार से ठंडे पानी से भरी बोतल खरीदनी पड़ रही है। इस स्थिति में गरीब वर्ग के मरीजों पर आर्थिक खर्च बढ़ रहा है।

मानहड़ अस्पताल पर लगा रहता है ताला–गोरमी क्षेत्र के मानहड़ गांव में शासन द्वारा सामुदायिक अस्पताल शुरू किया गया था, लेकिन अस्पताल खुलने के बाद से यहां पर मरीजों को देखने के लिए पदस्थ डॉक्टर्स और अन्य कर्मचारी नहीं आए हैं। स्थिति यह है कि अस्पताल के मेन गेट पर सदैव ताला लटका रहता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अस्पताल बंद होने से लोगों को गोरमी और भिंड इलाज के लिए जाना पड़ता है।

सामुदायिक अस्पताल में भी डॉक्टर की कमी–जिले में 7 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, 20 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और 186 उप स्वास्थ्य केंद्र संचालित हो रहे हैं। इन अस्पतालों में 49 चिकित्सा अधिकारी और विशेषज्ञ डॉक्टर की कमी है। स्थिति यह है कि इन स्वास्थ्य केंद्रों के लिए स्वीकृत मेडिसिन, सर्जिकल एवं स्त्री रोग विशेषज्ञों के सात-सात पद हैं। लेकिन इन पर एक-एक विशेषज्ञ नियुक्त है, वहीं जिले में आयुष चिकित्सा अधिकारी के 7 पदों में से एक भी पद नहीं भरा गया है। सभी पद लंबे समय से रिक्त हैं।

डॉक्टरों की कमी को लेकर शासन को अवगत कराया है–डॉक्टर और विशेषज्ञ की कमी के संबंध में प्रदेश शासन को अवगत कराया गया है। इन खाली पदों पर नियुक्ति शासन द्वारा की जानी है। वैसे भी यहीं नहीं पूरे प्रदेश के अस्पतालों में ही डॉक्टर्स की कमी है। जिन अस्पतालों में व्यवस्था खराब है, वहां की व्यवस्था सुधारने के लिए वहां के इंचार्ज को कहा जाएगा। जल्दी ही अस्पतालों की व्यवस्थाएं सुधारी जाएंगी। मरीजों को परेशान नहीं होने दिया जाएगा।

प्रश्न 7. अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थग्रहण का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-71, 'अनुवाद की प्रक्रिया (1) : अर्थग्रहण'

प्रश्न 8. कोई रचना करते समय लेखक को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-104, 'रचना करते समय ध्यान देने योग्य बातें'

प्रश्न 9. वर्णनात्मक लेखन का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-131, 'परिचय', पृष्ठ-138, प्रश्न 1

प्रश्न 10. 'सार लेखन' पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-114, 'सार लेखन'

खण्ड - ग

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नोट्स लेखन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-114, 'नोट्स लेखन'

(ख) प्रभावी लेखन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-88, प्रश्न 1

(ग) सरकारी पत्राचार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-36, 'सरकारी पत्राचार'

(घ) शब्दों का महत्त्व

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'शब्दों का महत्त्व'

(ङ) मुहावरे और लोकोक्तियाँ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-6, 'मुहावरे और लोकोक्तियां'

(च) समाचार प्राप्ति के स्रोत

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-55, 'समाचार प्राप्ति के स्रोत'

(छ) साहित्यिक अनुवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-80, प्रश्न 4

■ ■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

हिंदी भाषा : लेखन कौशल

शब्द संपदा, लोकोक्तियां

1

परिचय

ध्वनियों का सार्थक समूह 'शब्द कहलाता है अर्थात् शब्द ऐसे स्वतंत्रत वर्णों का समूह होता है, जिसका एक सार्थक अर्थ होता है। ये शब्द वाक्यों के साथ जुड़कर सम्प्रेषण का अर्थ प्रस्तुत करते हैं, जोकि सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक, वाणिज्यिक तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में प्रयोक्ता के विचारों को दूसरों तक पहुंचाने का सशक्त माध्य बनकर उभरते हैं। शब्दों को प्रयोग तथा संरचना व निर्मिति के आधार के अनेक भागों में विभक्त किया जाता है, जिसका परिचय भी प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत दिया गया है।

मुहावरे-लोकोक्तियाँ भी शब्दों के समान वाक्य के रूप में ही निर्मित तो होते हैं, लेकिन वे सरल वाक्यों के विपरीत लक्ष्यार्थ को प्रस्तुत करते हुए अपना अर्थ बताते हैं। मुहावरों-लोकोक्तियों की भी लेखन व मौखिक अभिव्यक्ति के दौरान अपनी कुछ प्रमुख विशेषताएं भी होती हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

शब्दों का महत्त्व

शब्द भाषा की लघुतम इकाई है। शब्दों से वाक्य बनते हैं। शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई है अर्थात शब्द वह इकाई है, जिसका प्रयोग भाषा में स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है। इन वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए–

हमारे व आपके मन में ढेर सारे विचार, संकल्पना व प्रकार्यों के चित्र होते हैं। अपनी बात दूसरों तक पहुंचाने के लिए हम वाक्यों का प्रयोग करते हैं। ये वाक्य कभी बहुत लम्बे-लम्बे होते हैं, किन्तु कभी हमारा काम एक शब्द में ही चल जाता है। यही शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई होते हैं। स्वतंत्र इकाई होने के कारण ही मूल शब्दों को कोष में स्थान दिया जाता है।

हम गिन सकते हैं कि ऊपर पांच वाक्य लिखे हुए हैं। वाक्य गिनने की पहचान तो सीधेतौर पर विराम-चिह्नों से हो जाती है। जितने विराम-चिह्न आएंगे, उतनी वाक्यों की संख्या होगी। क्या आप बता सकते हैं, इनमें कुल कितने शब्द आए। कम्प्यूटर तत्काल बताता है कि इन लाइनों में 72 शब्दों का प्रयोग किया गया है। कम्प्यूटर शब्दों की पहचान शब्दों के बीच में आए रिक्त स्थान से करता है।

सभी अलग-अलग शब्दों से किसी निश्चित अर्थ का बोध होता है। शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई हैं। प्रत्येक शब्द की कोई न कोई संकल्पना होती है तथा अवसर मिलते ही शब्दों के माध्यम से सामने आ जाती है। संकल्पनाएं एक समान होती हैं, परंतु प्रत्येक भाषा-भाषी अपनी भाषा में शब्दों को मूर्त रूप देता है। अत: किसी एक ही संकल्पना के लिए प्रत्येक भाजा में अलग-अलग शब्द होते हैं।

शब्द की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं–

1. शब्द भाषा की स्वतंत्र व सार्थक इकाई है।
2. शब्द किसी-न-किसी विचार, संकल्पना अथवा प्रकार्य का बोध कराता है।
3. प्रत्येक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है।
4. शब्द का अर्थ अपनी अमूर्त अवस्था में शब्द में छिपा रहता है व मूर्त शब्द के रूप में अभिव्यक्त होकर किसी विचार अथवा प्रकार्य का बोध कराता है।

भाषा के सामाजिक स्तर भेद

भाषा के सामाजिक स्तर भेद से तात्पर्य है कि भाषा के औपचारिक और अनौपचारिक रूपों को स्थिति, स्थान, संबंध, व्यवसाय आदि के अनुसार प्रयोग किया जाए। जैसे मित्र आपस में मिलने पर 'तू', 'अबे' जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, घर में माता-पिता एवं बड़ों के साथ आदरसूचक भाषा का प्रयोग किया जाता है। किसी कार्यालय, विद्यालय, व्यापार, मजदूरी करने वाले लोगों आदि सभी के साथ भाषा का स्तर अलग हो जाता है। अनौपचारिक संबंधों में हम संबोधनों का प्रयोग कम करते हैं तथा भाषा में आत्मीयता होती है। इसके विपरीत औपचारिक संबंधों में भाषा में औपचारिकता एवं सीमित शब्दावली का प्रयोग अधिक रहता

www.neerajbooks.com

है। औपचारिक भाषा में शब्दों के चयन एवं प्रयोग में सावधानी अत्यंत आवश्यक है।

सामाजिक स्तर पर हम भाषा में प्रयुक्त शब्दों और विशिष्ट रूपों से भाषा में भेद कर सकते हैं। साक्षर और निरक्षर की भाषा, शिक्षक और छात्र की भाषा, मित्रों की भाषा, व्यवसायियों की भाषा, डॉक्टर-मरीज आदि की भाषा में अंतर आसानी से पता चल जाता है।

उदात्त कथन–उदात्त कथन का अर्थ है कि दुखद स्थितियों में शिष्ट, उदात्त कथनों द्वारा स्थिति को व्यक्त किया जाता है। उदात्त कथन के अंतर्गत सांकेतिक एवं प्रतीकात्मक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है; जैसे–किसी की मृत्यु को व्यक्त करने के लिए 'मौत' की जगह निधन', 'देहांत', 'स्वर्गवास' आदि शब्दों का प्रयोग करना। किसी स्त्री के पति की मृत्यु का समाचार देने के लिए 'सुहाग उजड़ना', 'चूड़ियाँ टूटना', सिंदूर पुंछना' जैसे मुहावरों का प्रयोग करना। उदात्त कथन अमंगलकारी सूचना देते समय झिझक को कम करने तथा अमंगल का भाव कम करने के लिए बोले जाते हैं।

परिस्थितियों के अनुसार उदात्त कथन भी बदल जाते हैं। साधारणतः स्त्री के हाथ की चूड़ी के चटक जाने पर 'चूड़ी टूटना' की जगह 'चूड़ी मौल जाना' कहा जाता है। उदात्त कथन अभद्रता से बचने के लिए भी प्रयोग में लाए जाते हैं; जैसे–बच्चे ने बिस्तर गीला कर दिया, बाथरूम कहाँ है? आदि।

शब्दों के विभिन्न स्रोत (शब्द-भंडार)

उत्पत्ति के आधार पर शब्द-भेद–उत्पत्ति के आधार पर शब्द के निम्नलिखित चार भेद हैं–

1. तत्सम–संस्कृत भाषा के शब्द तत्सम कहलाते हैं; जैसे–अग्नि, क्षेत्र, वायु, ऊपर, रात्रि, सूर्य आदि।

2. तद्भव–जो शब्द रूप बदलने के बाद संस्कृत से हिन्दी में आए हैं, वे तद्भव कहलाते हैं; जैसे–आग (अग्नि), खेत (क्षेत्र), रात (रात्रि), सूरज (सूर्य) आदि।

3. देशज–जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति व आवश्यकतानुसार बनकर प्रचलित हो गए हैं, वे देशज कहलाते हैं; जैसे–पगड़ी, गाड़ी, थैला, पेट, खटखटाना आदि।

4. विदेशज–विदेशी जातियों के संपर्क से उनकी भाषा के बहुत से शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं। ऐसे शब्द विदेशी अथवा विदेशज कहलाते हैं; जैसे–स्कूल, अनार, आम, कैंची, अचार, पुलिस, टेलीफोन, रिक्शा आदि। ऐसे कुछ विदेशी शब्दों की सूची नीचे दी जा रही है–

अंग्रेजी – कॉलेज, पेंसिल, रेडियो, टेलीविजन, डॉक्टर, लैटरबक्स, पैन, टिकट, मशीन, सिगरेट, साइकिल, बोतल, फोटो, डॉक्टर, स्कूल आदि।

फारसी – अनार, चश्मा, जमींदार, दुकान, दरबार, नमक, नमूना, बीमार, बर्फ, रूमाल, आदमी, चुगलखोर, गंदगी, चापलूसी आदि।

अरबी – औलाद, अमीर, कत्ल, कलम, कानून, खत, फकीर, रिश्वत, औरत, कैदी, मालिक, गरीब आदि।

तुर्की – कैंची, चाकू, तोप, बारूद, लाश, दारोगा, बहादुर आदि।

पुर्तगाली– अचार, आलपीन, कारतूस, गमला, चाबी, तिजोरी, तौलिया, फीता, साबुन, तंबाकू, कॉफी, कमीज आदि।

फ्रांसीसी– पुलिस, कार्टून, इंजीनियर, कर्फ्यू, बिगुल आदि।

चीनी – तूफान, लीची, चाय, पटाखा आदि।

यूनानी – टेलीफोन, टेलीग्राफ, ऐटम, डेल्टा आदि।

जापानी – रिक्शा आदि।

डच – बम आदि।

शब्दों का अर्थ पक्ष

अर्थ की दृष्टि से शब्द के दो भेद हैं–*(i)* सार्थक शब्द *(ii)* निरर्थक शब्द।

***(i)* सार्थक शब्द**–जिन शब्दों का कुछ-न-कुछ अर्थ हो वे शब्द सार्थक शब्द कहलाते हैं; जैसे–रोटी, पानी, ममता, डंडा आदि।

***(ii)* निरर्थक शब्द**–जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता है, वे शब्द निरर्थक कहलाते हैं, जैसे–रोटी-वोटी, पानी-वानी, डंडा-वंडा; इनमें वोटी, वानी, वंडा आदि निरर्थक शब्द हैं। निरर्थक शब्दों पर व्याकरण में कोई विचार नहीं किया जाता है।

सहप्रयोग (Collocation)–शब्द एक-दूसरे पर आश्रित होते हैं। अर्थ की दृष्टि से 'हत्या' कहने पर पुलिस, गिरफ्तार, अदालत, सजा आदि शब्द ध्यान में आते हैं। रेगिस्तार से गरमी, ऊँट, नखलिस्तान (Oasis) आदि शब्द जुड़े हुए हैं। शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए सहप्रयोग करने वाले अन्य शब्दों का उपयोग करना पड़ता है। एक शब्द को सीखते समय अन्य समक्षेत्रीय-सहयोगी शब्दों को भी सीखना आवश्यक है।

सहप्रयोग का शैली की दृष्टि से भी महत्त्व है; जैसे–'शमा' और 'परवाना' का एक साथ प्रयोग करना, 'दिया' और 'परवाना' या 'शमा' और 'कीट' का नहीं। सामान्य बोलचाल में 'हाथ का काम' कहेंगे (हस्त की कला नहीं), साहित्यिक या पारिभाषिक अर्थों में 'हस्तकला' (हाथ की कला नहीं), 'हृदयगति' (दिल की गति नहीं) 'कुटीर उद्योग (झोपड़ी उद्योग नहीं), 'विद्युत ऊर्जा' (बिजली ऊर्जा नहीं) आदि प्रयोग में शब्द बदलने की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। ऐसे प्रयोगों में शब्द बदलने पर भाषा में शैलीगत दोष आ जाता है।

शब्द-निर्माण

वाक्य में प्रयुक्त शब्द विभिन्न प्रत्यय लग जाने के बाद जब एक निश्चित रूप ग्रहण करके निश्चित प्रकार्य करने लगते हैं, ऐसे प्रकार्ययुक्त शब्द शब्द-रूप या पद कहलाते हैं। भाषा में शब्दों का वाक्य में प्रयोग करने के लिए विभिन्न शब्द-रूप बनाए जाते हैं। यह प्रक्रिया शब्द-रूप निर्माण कहलाती है। इस दृष्टि से किसी भी शब्द में प्रत्यय लगाकर अनेक रूप बनाए जा सकते हैं।

www.neerajbooks.com

शब्द-रूप निर्माण प्रक्रिया से नए शब्दों का निर्माण नहीं होता, वरन ये उसी शब्द के विभिन्न रूप होते हैं और वाक्य में अलग-अलग व्याकरणिक कार्य करते हैं; जैसे–पढ़ना शब्द से बने विभिन्न शब्द-रूप के अलग-अलग प्रकार्य होंगे–

1. जल्दी पढ़।
2. जल्दी पढ़ो।
3. जल्दी पढ़िए।
4. जल्दी पढ़िएगा।

पहले वाक्य का 'पढ़', 'शब्द-रूप' संकेत दे रहा है कि इस वाक्य का कर्त्ता 'तू' होगा, अगले वाक्य में, 'पढ़ो' रूप का कर्त्ता 'तुम' व क्रमशः तीसरे व चौथे वाक्य के 'पढ़िए', 'पढ़िएगा' रूप का कर्त्ता 'आप' होगा। प्रयोग व प्रकार्य की दृष्टि से 'लिख' रूप मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम के साथ ही प्रयोग किया जा सकता है। 'पढ़ो' रूप मध्यम पुरुष बहुवचन के साथ तथा 'पढ़िए', 'पढ़िएगा' रूप बहुवचन सम्मानसूचक सर्वनाम (आप) के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

भाषाओं में एक शब्द से अन्य शब्द बनाने की यह प्रक्रिया 'शब्द निर्माण प्रक्रिया' कहलाती है। शब्द निर्माण प्रक्रिया 'शब्द-साधन' अथवा 'व्युत्पादन' भी कहलाती है। इस प्रक्रिया के कुछ शब्दों के उदाहरण इस प्रकार हैं–

1.	अप	+	शकुन	=	अपशकुन
	अन	+	जान	=	अनजान
	परि	+	पूर्ण	=	परिपूर्ण
2.	सुंदर	+	ता	=	सुंदरता
	सवार	+	ई	=	सवारी
	मित्र	+	ता	=	मित्रता
3.	मंत्री	+	परिषद	=	मंत्रीपरिषद
	राज	+	भाषा	=	राजभाषा
	स्नान	+	गृह	=	स्नानगृह

शब्द रचना

अपने अभिप्राय को अभिव्यक्त करने के लिए हमें अधिक से अधिक शब्दों की आवश्यकता होती है। अतः नए-नए शब्दों की रचना दो प्रकार से की जा सकती है–उपसर्ग लगाकर तथा प्रत्यय जोड़कर।

1. उपसर्ग–ऐसे शब्दांश जो किसी शब्द से पहले लगकर उस शब्द के अर्थ को बदल देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं। हिन्दी भाषा में संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू के शब्दों का प्रयोग होता है।

(क) संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	*शब्द*
उप (निकट, समान या गौण)	उपकार, उपकरण
सम (अच्छा, संयोग, सहित)	संकल्प, संतोष
अधि (ऊंचे, अधिक या श्रेष्ठ)	अधिकार, अध्यक्ष
निर/निस् (रहित, निषेध या बिना)	निर्मल, निश्चल
अनु (पीछे, बाद में, समान, प्रत्येक)	अनुग्रह, अनुभव
परा (विपरीत)	पराधीन, पराजय
दुर/दुः/दुस (बुरा, कठिन)	दुर्गम, दुस्साहस
सु (शुभ, सहज)	सुगम, सुयोग
अभि (सामने, पास, चारों ओर)	अभियान, अभिनय
प्र (अधिक, आगे)	प्रकृति, प्रगति
अव (बुरा, हीन, नीचे)	अवगत, अवनति
प्रति (हर एक, विरुद्ध)	प्रतिक्षण, प्रतिकूल
अप (अनुचित, बुरा)	अपवाद, अपयश
परि (चारों ओर)	परिपूर्ण, परिक्रमा
आ (तक, समेत, पूर्ण)	आगमन, आमरण
वि (विशेषता, भिन्नता, अभाव)	विकार, विनाश
अति (बहुत अधिक)	अतिशय, अत्याचार
नि (निषेध, निपुणता, अधिकता)	निष्कपट, निबंध
अ (अभाव, निषेध, हीन, विपरीत)	अकाल, अधर्म
अंतः/अंतर् (भीतर)	अंतर्मन, अंतःकरण
अधः (नीचे)	अधःपतन, अधोलिखित
अन् (अभाव)	अनर्थ, अनुपम
अलम् (बहुत)	अलंकार, अलंकरण
कु (बुरा)	कुकर्म, कुरूप
चिर (बहुत देर)	चिरकाल, चिरायु
तिरस्/तिरः (निषेध)	तिरस्कार, तिरोहित
पुनर् (फिर)	पुनर्जन्म, पुनर्मिलन
पुरस् (सामने)	पुरस्कार
पुरा (पहले)	पुरातन, पुरातत्त्व
प्राक्/प्राग (पहले)	प्राक्कथन, प्रागैतिहासिक
प्रादुर् (प्रकट होना)	प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत
बहिस्/बहिर् (बाहर)	बहिष्कार, बहिर्मुखी
सत् (सच्चा)	सज्जन, सदाचार
सम (समान)	समकोण, समकालीन
सह (साथ)	सहपाठी, सहोदर
स्व (अपना)	स्वजन, स्वतंत्र
स्वयं (अपना)	स्वयंसेवक, स्वयंवर

(ख) हिन्दी के उपसर्ग

उपसर्ग	*शब्द*
भर (भरा हुआ)	भरपूर, भरपेट
स/सु (सहित, अच्छा)	सकल, सहित
अ (अभाव, निषेध)	अज्ञान, अथाह
दु (कम)	दुबला, दुसाध्य
अन (निषेध, अभाव)	अनपढ़, अनजान

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

औ/अव (हीन)	औगुन, अवगुण
क/कु (बुरा)	कपूत, कुसंग
अध (आधा)	अधखिला, अधपका
उन (एक कम)	उनतीस, उनसठ
चौ (चार)	चौमासा, चौराहा
नि (रहित)	निडर, निकम्मा
पर (दूसरी पीढ़ी का)	परदादा, परपोता
बिन (रहित)	बिनब्याहा, बिनजाने

कुछ शब्दों में एक से अधिक उपसर्गों का प्रयोग भी होता है। उदाहरणतया–

समालोचना - सम् + आ + लोचना
पर्यावरण - परि + आ + वरण
अप्रत्यक्ष - अ + प्रति + अक्ष
अनासक्ति - अन् + आ + सक्ति
दुर्व्यवहार - दुर् + वि + अव + हार

(ग) उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	*शब्द*
बे (अभाव)	बेईमान, बेकसूर
हर (प्रत्येक)	हररोज, हरदम
सर (मुख्य)	सरताज, सरपंच
गैर (भिन्न)	गैरहाजिर, गैरसरकारी
दर (में)	दरअसल, दरहकीकत
ना (नहीं)	नापसंद, नालायक
बद (बुरा)	बदनाम, बदसूरत
हम (साथ)	हमनाम, हमसफ़र
कम (थोड़ा, हीन)	कमसिन, कमजोर
ऐन (ठीक, पूरा)	ऐनवक्त, ऐनमौका
खुश (अच्छा)	खुशमिजाज, खुशनसीब
बा (सहित)	बाइज्जत, बावजूद
बिला (बिना)	बिलावजह, बिलानागा
ला (बिना)	लावारिस, लाजवाब

2. **प्रत्यय**–जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में लगकर उस शब्द के अर्थ में विशेषता ला देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

(क) कर्त्तासूचक प्रत्यय

प्रत्यय		*शब्द*
आर	–	सुनार, लुहार
एरा	–	सपेरा, लुटेरा
हारा	–	लकड़हारा, सर्वहारा
गर	–	जादूगर, कारीगर
वाला	–	रखवाला, सब्जीवाला
अक	–	पाठक, दर्शक
इया	–	रसोइया, बंबइया

(ख) भाववाचक प्रत्यय (संज्ञा या विशेषण से)

प्रत्यय		*शब्द*
अंत	–	रटंत, गढ़ंत
आई	–	लिखाई, पढ़ाई
आन	–	मिलान, लगान
आहट	–	घबराहट, गरमाहट
आवट	–	लिखावट, सजावट
इमा	–	महिमा, लालिमा
क	–	घातक, गायक
पन	–	लड़कपन, पागलपन
ता	–	मानवता, सरलता
त्व	–	व्यक्तित्व, पुरुषत्व
ई	–	लंबाई, मिठाई
आव	–	चढ़ाव, बहाव
औती	–	बपौती, कटौती
पा	–	बुढ़ापा, मोटापा

(ग) विशेषणसूचक प्रत्यय

प्रत्यय		*शब्द*
ऊ	–	चालू, पेटू
आक, आका	–	चालक, लड़ाका
आलु	–	दयालु, कृपालु
आलू	–	झगड़ालू, लजालू
आ	–	भटका, भूखा
ऐया	–	गवैया, खवैया
इया	–	कलकतिया, घटिया
गर	–	कारीगर, जादूगर
ईय	–	अनुकरणीय, भारतीय
ईला	–	रंगीला, चमकीला
वान	–	रूपवान, गाड़ीवान
आऊ	–	बिकाऊ, टिकाऊ
वाला	–	टोपीवाला, चायवाला
ला	–	पहला, अगला
ऐल	–	गुस्सैल, रखैल
दार	–	मालदार, असरदार
कर	–	भयंकर, प्रलयंकर
कारी	–	आज्ञाकारी, कलाकारी
द	–	सुखद, दुःखद
दायी	–	दुखदायी, सुखदायी
नाक	–	शर्मनाक, खौफनाक
देह	–	तकलीफदेह, आरामदेह

Neeraj Publications www.neerajbooks.com